Research Paper | Education | E-ISSN No : 2454-9916 | Volume : 11 | Issue : 6 | June 2025



बैगा जनजाति में सामाजिक–आर्थिक गतिषीलता : एक भौगोलिक अध्ययन

डॉ. देवेन्द्रधर द्विवेदी[1], तामेश्वरी[2]

[1] सहायक प्राध्यापक (भूगोल) शासकीय पं. जवाहर लाल नेहरू स्नातकोत्तर महाविद्यालय, बेमेतरा, जिला–बेमेतरा (छ.ग.)

ABSTRACT

प्रस्तुत शोध पत्र में राष्ट्रपति के दत्तक पुत्र माने जाने वाले 75 विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक ''बैगा'' जो कि सतपुड़ा पर्वत श्रृंखला के भाग मैकाल में निवासरत है, की सामाजिक–आर्थिक गतिशीलता को ज्ञात करने का प्रयास किया गया है। यह शोध पत्र द्वितीयक समंकों पर आधारित है, जिसके लिए शोध प्रबंध व शोधपत्र सहित बैगा जनजाति के सन्दर्भ में केन्द्र व राज्य सरकार द्वारा प्रकाशित अभिलेखों की सहायता से पूर्ण किया गया है। विश्लेषण पश्चात स्पष्ट हुआ है कि बैगा जनजाति समुदाय शिक्षा, स्वास्थ्य व आर्थिक मामलों में पिछड़े हुए हैं, हालांकि केन्द्र व राज्य सरकार सहित विभिन्न गैर–शासकीय संगठनों द्वारा किये गये प्रयासों से पूर्व की अपेक्षा सकारात्मक परिवर्तन दृष्टिगोचर हो रहे हैं। बैगा जनजाति में शैक्षणिक सुधार, स्वास्थ्यगत स्थिति व कृषि कार्यप्रणाली, बच्चों में कुपोषण, गर्भवती महिलाओं का टीकाकरण, कृषि व वनोपज का बेहतर मूल्य प्राप्त हो रहा है। परिणामतः इनकी सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार हो रहा है।

KEYWORDS: बैगा जनजाति, सामाजिक गतिशीलता, आर्थिक व व्यवसायिक गतिशीलता

प्रस्तावना

बैगा जनजाति समुदाय राष्ट्रपति के दत्तक पुत्र माने जाते हैं। यह भारत सरकार द्वारा चयनित 75 विशेष पिछड़ी जनजातियों में से एक है। बैगा जनजाति समुदाय मैकाल पर्वत श्रेणी में निवास करती है, जो छत्तीसगढ़ के गौरेला–पेण्ड्रा–मरवाही, मुंगेली, कबीरधाम, खैरागढ़ जिले तथा मध्यप्रदेश के बालाघाट, मण्डला, डिण्डोरी, अनुपपुर जिले तक विस्तृत है। इस जनजाति समुदाय की सांस्कृतिक स्थिति बहुत सुदृढ़ है। बैगा आदिवासी एक गोदना (Tattoo) प्रिय जनजाति है, जिसमें महिला वर्ग बचपन (14–16 वर्ष) से ही विभिन्न प्रकार के गोदना (झेला, करेला, टिपकी, मछली इत्यादि आकार) गोदवाते हैं। सर्वप्रथम 14–16 वर्ष होने पर अविवाहित लड़के की माथे पर व्ही (V) आकार के गोदना से प्रारंभ करते हैं तथा आयु के साथ–साथ शरीर पर गोदना की संख्या भी बढ़ती जाती हैं।

''एल्विन वेरियर (1939) ने अपनी रचना 'द बैगा' में बैगा जनजाति समुदाय को मेडिसीन मैन कहा है, क्योंकि इन्हें वनोपज से प्राप्त होने वाले विभिन्न प्रकार के जड़ी–बूटी व औषधियों का ज्ञान है।'' रसेल व हीरालाल (1916)[2] द्वारा अपने अध्ययन में बैगा जनजाति के अनेक उप–समूहों यथा–भतोरिया, बिंझवार, गोण्डवानिया, खतभानिया, कोंधि, नरोतिया, नहार या रायबनिया और छः प्रकार के गोत्र समूह, जैसे–घुघरिया, लेपिया, मरकार, मरावी, नेताम और टेकाम का उल्लेख किया है। कुमार, गजेन्द्र (2003)[3] ने अपने शोध कार्य में बैगा जनजाति के सामाजिक, सांस्कृतिक और आर्थिक अध्ययन से बैगा जनजाति की परम्पराओं, सामाजिक व्यवस्था, शिक्षा, औषधि ज्ञान इत्यादि को स्पष्ट किया है।

बैगा जनजाति की प्रमुख देवी–देवता बुढ़ादेव है तथा ये साल वृक्ष की पूजा करते हैं एवं अत्यंत प्रकृति प्रेमी होते है।। अपनी पारपरिक कृषि कार्य प्रारंभ करने से पूर्व प्रकृति व साल वृक्ष की पूजा करते हैं। बैगाओं में छट्ठी (जन्मोत्सव) विवाह, देवारी (दीपावली), करमा नृत्य, शैला नृत्य, बिलमा, परघौनी, घोड़ी पैठाई प्रसिद्ध है। बैगा समुदाय आर्थिक दृष्टिकोण से बहुत पिछड़े हुए है तथा पारंपरिक कृषि (बीज छीड़कर बोना), वनोपज (शहद, जंगलीफल, जड़ी–बूटी इत्यादि) को स्थानीय बाजारों में बेचकर धन एकत्रित करते हैं।

छत्तीसगढ़ में बैगाओं की जनसंख्या 2011 के अनुसार 89,744 है वहीं कुल साक्षरता 40.6ः (पुरूष–50.4 प्रतिशत व महिला–30.8 प्रतिशत) है। कबीरधाम जिले का क्षेत्रफल 4447.5 वर्ग किलोमीटर है व अक्षांश $20^0 32'$ से 2035′ उत्तरी अक्षांश से $80^0 48'$ से $81^0 28'$ पूर्वी देशांतर के मध्य विस्तृत है एवं जिले की कुल जनसंख्या 8,22,526 है।[4]

कबीरधाम जिला एक विकासशील जिला है, जिसकी स्थापना वर्ष 1998 में राजनांदगाँव व बिलासपुर जिले के कुछ भागों को मिलाकर बनाया गया है। कबीरधाम जिला 1956 से पूर्व मध्यप्रदेश जिले के मण्डला राजवंश का हिस्सा था। वर्तमान समय में यह राष्ट्रीय राजमार्ग–30 (चिल्फीघाटी से होकर बेमेतरा की ओर) शहर के मध्य से गुजरती है।

क्र.	तहसील का नाम	जनसंख्या			ग्रामीण	नगरीय
		योग	पुरूष	स्त्री		
1	कवर्धा	9493	4746	4747	5941	3552
2	बोड़ला	49870	24573	25297	48553	1317
3	स.लोहारा	21643	10660	10983	21222	421
4	पण्डरिया	10008	4853	5155	8239	1769
5	कुंडा	1941	1002	939	1941	0

6	पिपरिया	7223	3528	3695	7078	145
7	रेंगाखारकला	24118	11975	12143	24118	0
8	कुकदूर	42747	21260	21487	42747	0
जिला–कबीरधाम		167043	82597	84446	159839	7204

सारणी–1 : कबीरधाम जिले में तहसीलवार अनुसूचित जनजाति जनसंख्या

अनुसूचित जनजाति वर्ग की कुल संख्या 1,67,043 है जो कि जिले की कुल जनसंख्या का 20.30 प्रतिशत है। इस वर्ग के पुरूषों की संख्या 82,597 एवं 84,446 महिलाएँ है। अनुसूचित जनजातियों की संख्या का 1,59,983 ग्रामीण एवं 7,060 जिले के शहरी क्षेत्रों में निवासरत है। जिले की साक्षरता दर 60.9 प्रतिशत है।

जिले में अनुसूचित जाति वर्ग की संख्या कुल 1,19,798 है जो जिले की कुल जनसंख्या 14.56 प्रतिशत है। अनुसूचित जाति पुरूषों की संख्या 60,154 एवं 59,644 महिलाएँ है। अनुसूचित जाति वर्ग के 1,04,474 व्यक्ति ग्रामीण क्षेत्रों में निवासरत हैं जबकि 15,324 व्यक्ति शहरी क्षेत्रों में निवासरत है।

क्र.	जिला	विकासखण्ड	ग्रामों की संख्या	परिवारों की संख्या
1.	कबीरधाम	बोड़ला	190	6635
		पंडरिया	78	4625
2.	मनेन्द्रगढ़– भरतपुर–चिरमिरी	भरतपुर	84	5174
		खडगवां	24	355
		मनेन्द्रगढ़	23	435
3.	गौरेला– पेण्डा–मरवाही	कोटा	33	1520
		गौरेला	17	2095
4.	मुंगेली	लोरमी	46	2358
5.	खैरागढ़– छुईखदान–गण्डई	छुईखदान	39	1348
योग			531	24545

सारणी–2: छत्तीसगढ़ में बैगा जनजातियों की स्थिति[5]

शोध साहित्य का पुनरावलोकन

कुमार, सचिन (2023)[6] ''छत्तीसगढ़ के बिलासपुर संभाग के बैगा जनजाति में सांस्कृतिक परिवर्तन'' अपने शोध पत्र में बैगा जनजाति की सामाजिक सांस्कृतिक पृष्ठभूमि, गोदना, परंपराओं एवं सामाजिक मान्यताओं, एकांकी जीवन शैली तथा जंगलों पर पूर्ण निर्भरता का उल्लेख किया गया है।

अजय (2022)[7] ने अपने शोध पत्र ''The Impact of Globalization on Human Rights of Baiga: A Case Study of Dindori District of Madhya Pradesh'' में मध्यप्रदेश के डिंडोरी जिले में निवासरत बैगा समुदाय का अध्ययन किया है।

सिंह, मुकश एवं मिश्रा, प्रीति (2022)[8] ''बैगा जनजाति को उपलब्ध पेयजल सुविधा का अध्ययन (कबीरधाम जिला के बोड़ला विकासखण्ड ग्राम बैलापानी के विशेष संदर्भ में)'' का शोध पत्र छत्तीसगढ़ राज्य के बैगा बहुल कबीरधाम जिले के बोड़ला विकासखण्ड के ग्राम बैलापानी के बैगा परिवारों का अध्ययन किया।

देवी, सरिता (2019)[9] ने ''शहडोल जिले में बैगा जनजाति में शिक्षा का स्तर एवं विकास'' में मध्यप्रदेश के शहडोल जिले में निवासरत बैगा जनजाति का अध्ययन किया। अपने अध्ययन में इन्होंने सरकार द्वारा चलाये जा रहे प्रमुख योजनाओं/अभिकरणों का बैगा जनजाति के सामाजिक–आर्थिक, शैक्षणिक, राजनैतिक तथा सांस्कृतिक स्तर पर पड़ने वाले प्रभावों को आधुनिक समाज समक्ष प्रस्तुत करने का प्रयास किया है।

जैन, अरुण कुमार, एवं शर्मा, ए एन (2013)[10] ने ''इम्पैक्ट ऑफ एजुकेशन आन हेल्थ एवेअरनेस एमंग द बैगा ट्राईब'' अपने शोध पत्र में भारत के मध्य प्रदेश के मंडला जिले के बैगा परिवारों का अध्ययन किया।

शोध प्रविधि

प्रस्तुत शोध पत्र गुणात्मक एवं वर्णात्मक शोध प्ररचना के अंतर्गत शामिल है। इसमें प्रमुख रूप से द्वितीयक समंकों के आधार पर विश्लेषण किया गया है। शोधार्थी द्वारा द्वितीयक समकों से संकलन हेतु विषय से संबंधित शोधपत्र/शोधप्रबंध, शासकीय व गैर–शासकीय प्रतिवेनद व अन्य दस्तावेजों, इंटरनेट पर उपलब्ध सामग्रियों की सहायता लिया गया है।

शोध अध्ययन की समीक्षा

विभिन्न शोध साहित्यों के अध्ययन व तथ्यों के विश्लेषण के पश्चात् यह कहा जा सकता है कि बैगा जनजाति अति प्राचीन हैं जसिका अवशेष नर्मदा घाटी से प्राप्त हुआ है। यह जनजाति प्रोस्टो ऑस्ट्रेलाइट प्रजाति की समकक्ष मानी जाती है। बैगा जनजाति में पूर्व की अपेक्षा 21वीं शताब्दी के बाद इनकी सामाजिक, आर्थिक, मनोरंजन एवं सांस्कृतिक पृष्ठभूमि तथा आजीविका पर सकारात्मक रूप से परिवर्तन आया है। वहीं शासकीय, गैर–शासकीय योजनाओं (स्वास्थ्य, शिक्षा, रोजगार, आवास व राजनीति, इत्यादि) के कारण इनकी मूलभूत सुविधाओ में सुधार आया है, जो बैगा ग्राम, शहर से संलग्न है (औसतन 15 से 20 किमी.) वहाँ सुदूर क्षेत्रों में रहने वाले बैगा की अपेक्षा अधिक सुधार हुआ है। मनरेगा आदिवासी क्षेत्र में रोजगार हेतु एक सकारात्मक कदम रहा है, जिसमें मजदूरी भुगतान सीधे बैगा आदिवासियों के बैंक खाते में आते हैं, जिससे इनके पास कुछ मात्रा में धन की बचत होती है।

बैगाओं की वर्तमान सामाजिक–आर्थिक पृश्ठभूमि

भले ही बैगा जनजाति पर कई मामलों में सुधार कार्य दिखाई दे रहा है किन्तु इनकी मद्यपान, मांस भक्षण तथा कई सामाजिक कार्यों (जन्मोत्सव, विवाह व अन्य) में अधिक मात्रा में धन व्यय करते हैं। महिलाओ व बच्चों की स्वास्थ्य स्थिति में बेहतर नहीं कहा जा सकता, क्योंकि बैगा क्षेत्रों में नाममात्र की स्वास्थ्य सुविधा है, पोलियो टीकाकरण को छोड़ दे तो बुनियादी स्वास्थ्य सुविधाएँ अच्छी नही कहा जा सकता है। बच्चे आंगनबाड़ी जाते हैं तथा प्राथमिक व

माध्यमिक विद्यालय तक शिक्षा बड़ी मुश्किल से प्राप्त कर रहे हैं, किन्तु हाई/हायर सेकेण्डरी स्तर तक मात्र 12–15 प्रतिशत बैगा छात्र/छात्राएँ ही शिक्षा ग्रहण कर रहे हैं। आज भी सुदूर बैगा ग्रामों में पर्याप्त बिजली सुविधा नहीं है तथा कई मामलों में अंधविश्वास के आसानी से शिकार हो जाते हैं व गैर–आदिवासी इन्हें ठगने जैसा व्यवहार भी करने के मामले में स्पष्ट हुआ है।

निष्कर्ष

बैगा आदिवासी राज्य की सबसे कम जनसंख्या वाली जनजाति है, जो मैकाल पर्वत श्रृंखला में निवास करती है। राज्य में पंचायती राज व्यवस्था होने से कई बैगा ग्रामों में विकास कार्य हुए हैं तथा मुख्यमंत्री सड़क योजना का विस्तार हुआ है। परिणामस्वरूप कई विकास कार्यों को गति मिला है। ये लोग आसानी से शहरों/कस्बों की ओर आवागमन कर रहे हैं। इनके वनोपजों के ग्रहण को राज्य शासन द्वारा न्यूनतम समर्थन मूल्य पर खरीद रही है जिसके कारण वनोत्पादों को उचित मूल्य बैगाओं को मिल रहा है। मनरेगा ने भी रोजगार के मामले में अहम् भूमिका निभायी है। पारंपरिक कृषि में भी अब अति न्यून संख्या में परिवर्तन देखने को मिलता है, अब बैगा उन्नत कृषि से आधुनिक साधनों की सहायता से की जा रही है, ट्रैक्टर, उन्नत बीज, रासायनिक खाद का प्रयोग करना भी सीख रहे हैं। सिंचाई की सुविधाओं का अभाव है जिसके कारण कृषि पूर्णतः मानसून पर निर्भर है। वर्तमान समय में बैगा आदिवासियों की सामाजिक–आर्थिक स्थिति में सुधार होते दिख रही है, फिर भी अन्य आदिवासी/गैर–आदिवासी की अपेक्षा मुख्यधारा से बहुत पीछे है।

REFRENCES

1. Elvin. (1939). The Baiga. Gyan Publication, New Delhi, P 519.
2. Russell and Hiralal. (1916). The Tribes and Cost of the Central Probation of India. London, MacMillan Publication, PP 323-331.
3. कुमार, जी. (2020). बैगा जनजाति का सामाजिक एवं आर्थिक जीवन : एक ऐतिहासिक अध्ययन. अप्रकाशित शोध प्रबंध, पं. रविशंकर शुक्ल विश्वविद्यालय, रायपुर, (छ.ग.).
4. चन्द्राकर, आर. (2022). छत्तीसगढ़ के कबीरधाम जिले में बैगा जनजाति का सामाजिक व आर्थिक अध्ययन, अमोघव्रत, 1(4), 6–9.
5. छत्तीसगढ़ के अनुसूचित क्षेत्रों के प्रशासन पर राज्यपाल का प्रतिवेदन, छ.ग. शासन आदिमजाति तथा अनुसूचित जाति विकास विभाग, नया रायपुर, 2016–17, पृ. 220
6. कुमार, सचिन ''छत्तीसगढ़ के बिलासपुर संभाग के बैगा जनजाति में सांस्कृतिक परिवर्तन'' इन्टरनेशनल जनर्रल ऑफ रिव्यूव एण्ड रिसर्च इन सोशल साइंस, अंक–4, वर्ष–11, 2023 पृ. 265–269.
7. Ajay "The Impact of Globalization on Human Rights of Baiga: A Case Study of Dindori District of Madhya Pradesh" International Journal of Multidisciplinary Research and Development, Vol.-09, Issue-05, Pp 93-37.
8. सिंह, मुकेश एवं मिश्रा, प्रीति ''बैगा जनजाति को उपलब्ध पेयजल सुविधा का अध्ययन (कबीरधाम जिला के बोड़ला विकासखण्ड ग्राम बैलापानी के विशेष संदर्भ में)'' अंक–10, भाग–04, अप्रैल ; 2022, पृ. इ609– इ615.
9. देवी, सरिता ''शहडोल जिले में बैगा जनजाति में शिक्षा का स्तर एवं विकास'' अप्रकाशित शोधग्रंथ, अवधेश प्रताप सिंह विश्वविद्यालय, रीवा (म.प्र.), 2019.
10. जैन, अरुण कुमार, एवं षर्मा, ए. एन. ''इम्पैक्ट ऑफ एजुकेषन आन हेल्थ एवेअरनेस एमंग द बैगा ट्राईब इन मध्यप्रदेश, इंडिया : अ ब्रीफ नोट'' एजुकेशन नॉलेज एण्ड इकोनॉमी, अंक–03, भाग–03, दिसम्बर ; 2009, पृ. 177–182.